आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2351 • उदयपुर, मंगलवार 01 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्
मानवता का प्रतीक आपका अपना सेवा संस्थान

अब पहनने में उबाऊ नहीं लगेगी पीपीई किट, हर सौ सेकेंड में मिलेगी ताजा हवा

डीएसटी के सहयोग से मुंबई स्थित स्टार्टअप ने विकसित किया वेंटीलेशन सिस्टम। उपयोगकर्ता को प्रत्येक सौ सेकेंड के अंतराल पर मिलती है ताजा हवा। केंद्र सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) ने कई स्टार्टअप को इस काम में लगाया था।

कोरोना संक्रमण के खिलाफ छिड़ी जंग में अग्रिम मोर्चे पर तैनात डाक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों के बचाव के लिए पीपीई (पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट) किट एक अहम हथियार बनी हुई है। हालांकि इसको पहनकर घंटों काम करना अब तक एक बड़ी चुनौती थी। इसे पहनने वाला पसीने से पूरी तरह तर–बतर हो जाता है। फिलहाल देश के तकनीकी विशेषज्ञों ने इस समस्या का रास्ता खोज लिया है। इसे लेकर एक ऐसा वेंटीलेशन सिस्टम विकसित किया है, जो पीपीई किट की एयर सील को सुनिश्चित करने के साथ उपयोगकर्ता को प्रत्येक सौ सेकेंड के अंतराल पर ताजा हवा भी प्रदान करता है।

केंद्र सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) ने कई स्टार्टअप को इस काम में लगाया था। मुंबई के एक स्टार्टअप ने कोव–टेक वेंटीलेशन सिस्टम नाम की इस तकनीक को विकसित किया है। रिसर्च इनोवेशन इन्क्यूबेशन डिजाइन लेबोरेट्री (आरआइआइडीएल) के गौरांग शेट्टी ने मुताबिक कोव–टेक वेंटीलेशन सिस्टम को एक साधारण बेल्ट की तरह कमर में बाधा जा सकता है। इसके ऊपर पीपीई किट को पहना जाता है। यह वेंटीलेशन सिस्टम कोविड संक्रमित मरीजों के उपचार में लगे डाक्टरों और दूसरे स्वास्थ्य कर्मियों को काफी राहत पहुंचाने वाला है।

इस पूरे सिस्टम को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि पीपीई किट पूरी तरह से एयर सील रहती है और पहनने वाले को प्रत्येक सौ सेकेंड के अंतराल पर ताजा हवा भी प्रदान करती है। डीएसटी के मुताबिक इस सिस्टम का इस्तेमाल पुणे के एक अस्पताल में शुरू हो गया है। साथ ही जून तक सभी अस्पतालों को इस सिस्टम से लैस करने की तैयारी है।

सोलर एनर्जी उत्पादन में राजस्थान प्रदेश अव्वल

देश में सोलर एनर्जी उत्पादन में राजस्थान का अग्रणी स्थान बना हुआ है। जेएमके रिसर्च एंड एनालिटिकल संस्था की रिपोर्ट में इस साल देश के सोलर प्लांट्स में राजस्थान के सबसे ज्यादा 1745 मेगावाट केपिसिटी जुड़ी हैं। जबकि कर्नाटक के 1443 मेगावाट व तमिलनाडु के 1342 मोगावाट के सोलर प्लांट्स जुड़े है।

राजस्थान में सोलर पॉलिसी के एक साल में ही लगातार पार्को में निवेश बढ़ रहा है। यहां पर 23 हजार मेगावाट तक प्लांट्स लगाने की प्लानिंग हो चुकी है। प्रदेश में अगले तीन साल में 30 हजार मेगावाट सोलर प्लांट्स का टारगेट रखा है। इसके साथ ही सोलर विकिरण के कारण सोलर विकिरण के कारण सोलर उत्पादन भी बेहतर हो रहा है। राजस्थान सोलर एसोसिएशन के महासचिव का कहना है कि सोलर एनर्जी प्लांट्स में प्रदेश सबसे तेजी से बढ़ रहा है। यहां पर 23 हजार मेगावाट क्षमता के प्लांट्स के एग्रीमेंट्स हो चुके है तथा करीब 5 करीब मेगवाट केपिसिटी के प्लांट लग चुके हैं। राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम (आरआरईसी) के चेयरमेन व ऊर्जा प्रमुख सचिव ने बताया कि राजस्थान देश में सोलर हब बन रहा है। यहां पर सोलर पार्क के लिए बड़ा लैंड बैंक भी है।

कई कंपनिया आगे आई, स्थानीय लोगों को मिलेगा रोजगार

प्रदेश के सोलर पार्क में कई कंपनियो ने निवेश किया है तथा यहां टेक्नीशियनों की बड़ी संख्या में जरूरत है। ऐसे में मारवाड़ व आसपास के इलाके के युवा आईटीआई वा पॉलोटेक्निक कर यहां पर टेक्निशयन की नौकरी ढूंढ रहे है। पहले इस क्षेत्र के युवा केवल खेती व सरकारी नौकरी पर ही निर्भर होते थे।

पीड़ित किसान परिवार को मदत

कुछ दिन पहले गंगाखेड़ क्षेत्र के कतकरवाड़ी में किसान मंचक कतकड़े के घर में भीषण आग लग गई थी। आग ने उनके घर और उनकी आजीविका बकरियों और उनके दो चूजों को नष्ट कर दिया और दो बैलों को क्षति पहुंचाई। गरीब परिवार संकट में आ गया। कोरोना के कारण, उन्हें शिकायत दर्ज करने के लिए वाहन भी नहीं मिल सके।

मदद की आशा से गरीब किसान परिवार के सदस्य डेप्युटी कलेक्टर सुधीर जी पाटिल के कार्यालय में गए और उन्हें अपनी स्थिति व क्षति की जानकारी दी। यह महसूस करने हुए इस किसान को कानून के ढ़ांचे के भीतर मदद नहीं मिलेगी, सुधीर पाटिल ने धर्मार्थ संगठन, नारायण सेवा संस्थान उदयपुर जो हर मुश्किल में जरूरतमंद को सहायता के लिए तैयार रहता है।

परभणी जिला संयोजिका श्रीमती मंजू दर्डा से संपर्क किया और उनसे मदद का अनुरोध किया। इस पर उन्होंने पीड़ित किसान परिवार को खाद्यान्न, बर्तन, कपड़े आदि सामान दिया। इस अवसर पर पूजा दर्डा, सखाराम बोबड़े, राहुल सबने एवं हर्ष आंधले भी उपस्थित थे।

मेरठ और परभणी में भी घर–घर भोजन सेवा

भोजन पैकेट बनाने में जुटी सेवाभावी साधक टीम

कोरोना संक्रमित परिवारों के सेवार्थ नारायण सेवा संस्थान के मुख्यालय पर शुरू हुई घर–घर भोजन सेवा की तर्ज संस्थान की शाखा मेरठ (यू.पी.) और परभणी (महाराष्ट्र) में भी निःशुल्क भोजन सेवा 25 अप्रैल से शुरू हुई है।

शाखा परभणी की संयोजिका मंजु दर्डा के नेतृत्व में 1800 से अधिक पैकेट तथा मेरठ में मूलशंकर मेनारिया के सहयोग से 900 से ज्यादा भोजन पैकेट वितरित किए जा चुके है। अन्य शाखाओं में भी भोजन, राशन एवं दवाइयां आदि की निःशुल्क सेवा शुरू की जायेगी। यह सेवाएं कोरोना की दूसरी लहर की समाप्ति तक निरन्तर रहेगी पीड़ित मानवता को बचाना संस्थान का सर्वोपरि धर्म है।

दिव्यांगों को सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन

–लेखक श्री प्रशान्त अग्रवाल नारायण सेवा संस्थान अध्यक्ष

कोविड–19 एक तूफान की तरह आया है और इसके कारण अचानक जो बदलाव हुए हैं, उन्होंने पूरी दुनिया को थोड़ा और आधुनिक बना दिया है। सिर्फ फार्मेसी ही नहीं, तकनीक, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों के वैश्विक ढांचे में भी बदलाव हुए हैं। इसमें सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात यह है कि हम किस तरह इन बदलावों के साथ चल रहे हैं। पिछले कई वर्षों से स्वास्थ्य के इंफ्रास्ट्रक्चर को ऑनलाइन प्लेटफार्म पर लाने के जबरदस्त प्रयास चल रहे हैं और कोविड–19 के दुनिया भर में बढ़ते मामलों ने सभी अर्थव्यवस्थाओं को अपने स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए मजबूर किया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की ग्लोबल स्ट्रेटेजी ऑन डिजिटल हेल्थ 2020–2024 रिपोर्ट बताती है सब जगह, सब आयु वर्ग और सब के लिए स्वस्थ जीवन और जीवनशैली को प्रोत्साहित करना इसका मुख्य उद्देश्य है। 2019 में जारी यह रिपोर्ट कहती है कि सभी देशों में स्वास्थ्य सुविधाओं को आगे बढ़ाने और सहायता करने तथा सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल को प्राप्त करने में डिजिटल हेल्थ सहायक रहेगी।

यह स्वास्थ्य को बेहतर करने तथा बीमारियों को रोकने में भी सहायक रहेगी। इसी को देखते हुए रिपोर्ट में यह सुझाव दिया गया था कि इसकी संभावनाओं का पूरा इस्तेमाल करने के लिए राष्ट्रीय या क्षेत्रीय डिजिटल स्वास्थ्य प्रयास एक मजबूत रणनीति के तहत किये जाने चाहिए। इस रणनीति में वित्तीय, संगठनात्मक, मानवीय और तकनीकी संसाधनों का समावेश होना चाहिए।इस रणनीति पर विचार और काम करते हुए कई देशों ने डिजिटल स्वास्थ्य रणनीतियों को तेजी से लागू करना शुरू किया है। इसी तरह की एक रणनीति भारत सरकार ने विकसित की है जिसे राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन कहा गया है।

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन का मुख्य उद्देश्य एक ऐसा मजबूत डाटाबेस तैयार करना है जिसमें समावेशी स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर को शामिल किया जाएगा। इसके जरिये ऐसे पहचान पत्र तैयार किए जाएंगे जिनसे देश के प्रत्येक व्यक्ति को बाधारहित स्वास्थ्य सेवाएं मिलती रहें। हालांकि स्वास्थ्य के इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने के गम्भीर प्रयास किए गए हैं लेकिन दिव्यांगों को बाधारहित स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करने में आज भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

दिव्यांगों के सामाजिक समावेशन के विचार को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन दिव्यांगों को इस तरह सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा कि वे अपनी मनचाही स्वास्थ्य सेवाएं मांग सकें और प्राप्त कर सकें। मिशन को इस तरह बनाया गया है कि यह सभी के लिए बिना भेदभाव का एक ही तरह का प्लेटफार्म उपलब्ध कराएगा और स्वास्थ्य पहचान पत्रों के जरिये सामाजिक समावेशन करेगा। इससे हर व्यक्ति और दिव्यांग का अलग ई–रेकॉर्ड तैयार हो सकेगा। अब बड़े संस्थानों ने अपनी बाहे खोल दी हैं और दिव्यांगों को अपने यहां काम दे रहे हैं क्योंकि अब ऐसे कई कौशल आधारित कार्यक्रम उपलब्ध हैं जो दिव्यांगों को काम के लिए तैयार कर देते हैं।

महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके पास अपनी स्वास्थ्य रिपोर्ट रहेगी जिससे ये संस्थान अपने केडिडेट चुनते समय अपनी जरूरत के हिसाब से निर्णय कर सकेंगे। नारायण सेवा संस्थान वर्षों से इस तरह के सफल प्रयास कर रहा है जिससे इन दिव्यांगों को उसी तरह का वातावरण मिल सके जो मुख्य धारा के कैडिडेट्स को मिलता है। नारायण सेवा संस्थान इन दिव्यांगों को कौशल विकास का प्रशिक्षण देने से लेकर एक बेहतर जीवनशैली का अवसर देने तक का प्रयास कर रहा है। यहां इनकी क्षमताओं को बढ़ा कर उन्हें जीवन के हर क्षेत्र की चुनोतियाँ का सामना करने के लिए तैयार किया जा रहा है। राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन में इन दिव्यांगों के ई–रेकॉर्ड होंगे जिससे सरकार को इन्हें दिए जाने वाले उपचार के बारे में भविष्य की योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी और ये लोग मुख्य धारा के वातावरण के लिए तैयार हो सकेंगे। राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन के लागू होने के बाद दिव्यांगों के लिए कई सकारात्मक पहल होती दिखेगी। इनमें किफायती जैविक उत्पाद और उपचार शामिल होंगे। इसके जरिए उन नई तकनीकों को भी बढावा मिलेगा जो दिव्यांगों के उपचार के लिए जरूरी सामान देश में ही तैयार हो सकेगा। राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन पूरे स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को साथ लाकर दिव्यांगों को सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा ताकि वे अपनी मनचाही स्वास्थ्य सेवा मांग और प्राप्त कर सकें। यह मिशन नए उभरते हुए उद्यमियों और स्टार्टअप्स या घरेलू व्यवसायों को दिव्यांगों के लिए उपयोगी किफायती और आसानी से उपलब्ध उत्पाद व स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के अवसर निश्चित रूप से प्रदान करेगा।

नारायण सेवा संस्थान सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करता है और इसके उददेश्य का पूरी तरह समर्थन करता है, क्योंकि इससे ना सिर्फ पूरे स्वास्थ्य ढांचे को बदलने में मदद मिलेगी, बल्कि देश में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में पारदर्शिता भी आएगी।

गंगा शहर निवासी गुवाहाटी प्रवासी लोढा परिवार ने पेश की मिशाल
पुत्र की शादी में खर्च नहीं कर, दिव्यांगों के ऑपरेशन का लिया संकल्प
नारायण सेवा संस्थान बनी प्रेरणा का स्रोत

बीकानेर। गंगाशहर निवासी व गुवाहाटी प्रवासी समाजसेवी मानमल लोढा ने अपने पुत्र नितेश लोढा की शादी को वृहद स्तर पर न करके एक नारायण सेवा संस्थान के माध्यम से दिव्यांग का ऑपरेशन करवाने का निर्णय लिया है। नारायण सेवा संस्थान बीकानेर के प्रेरक कमल लोढा ने बताया कि गुवाहाटी के व्यवसायी मानमल लोढा ने बताया कि उत्सव के अवसर अनेक मिल जाएंगे लेकिन इस विकट दौर में सेवा धर्म निभाना जरूरी है।

गौरतलब है कि नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर 4 लाख से ज्यादा दिव्यांग ऑपरेशन कर चुकी है। कोरोना काल में 50,000 परिवारों को अनाज का निःशुल्क वितरण किया।

सम्पादकीय

एक प्रसिद्ध कवि ने बहुत ही प्रेरक गीत लिखा है – सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा। इसके पीछे अनेक प्रकार की भावात्मक बातें है हमारा मुल्क हमारे लिये सर्वश्रेष्ठ तो होता ही है, किन्तु कई ऐसी विशेषतायें भी हैं जो भारत को विश्व के अन्य देशों से अलग व श्रेष्ठ सिद्ध करती है। यह अपना ही देश है जहाँ विश्व के लगभग सभी धर्मों के अनुयायी रहते हैं। न केवल रहते हैं वरन उनका सामाजिक ताना बाना भी सुदृढ़ है। सर्वधर्म समभाव के वाक्य को चरितार्थ होता देखना हो तो यहां है। ज्ञान और विज्ञान का समन्वय यहां सदियों से हैं। विज्ञान को भौतिक व ज्ञान को आध्यात्मिक उन्नति का आधार माना गया है। ज्ञानी और विज्ञानी को यहाँ समान सम्मान मिलता रहा है। यहां की एक और परम उपलब्धि है कि भारतीय संस्कृति ने सभी संस्कृतियों को आत्मसात् किया है। हरेक धर्म व संस्कृति को पूरा सम्मान दिया है। सबके कल्याण का भाव भी यहीं दिखाई देता हैं। इसलिये तो जहां से अच्छा है हमारा देश।

कुछ काव्यमय

कोई भी देश
केवल भूमि का खण्ड
नहीं होता है।
वह अपने निवासियों को अपनी
गरिमा, संस्कृति और
भावनाओं में भिगोता है।
अपने देश को इसमें महारत है।
इसलिये सबसे ऊँचा भारत है।

- वरदीचन्द राव, अतिवि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

खतरनाक है क्रोध की आग

क्रोध में आदमी को कुछ नहीं सूझता। वह अपनी ही क्षति कर बैठता है। अतएव क्रोध का शमन कर ही किसी बात का निर्णय करें।

उमर खालीफा अपनी न्यायप्रियता, धर्म और धैर्यपूर्ण स्वभाव के लिए प्रसिद्ध थे। वे धर्म की रक्षा हेतु युद्ध लड़ने से भी पीछे नहीं हटते थे। एक बार उन्हें एक अधर्मी व्यक्ति से युद्ध करना पड़ा। युद्ध में उन्होंने उसे धराशायी कर दिया और म्यान से अपनी तलवार निकाल ली। जैसे ही उस व्यक्ति पर वे प्रहार करने वाले थे, उस व्यक्ति ने उन्हें गाली दी। उमर खलीफा ने उस व्यक्ति को छोड़ दिया तथा तलवार म्यान में डाल ली।

उमर खलीफा अब शांत होकर खड़े हो गए। यह देखकर वहाँ उपस्थित सभी लोग हतप्रभ थे उन्होंने

उनसे कहा कि –मौका अच्छा था, आपने उसे छोड़ क्यों दिया ? अच्छा होता आप उस व्यक्ति को मार ही देते। उमर खलीफा ने उत्तर दिया – इसके गाली देने पर मुझे क्रोध आ गया था।

मैंने सोचा पहले मैं अपने क्रोध को तो मार लूँ, फिर इसे मार दूँगा। मैं क्रोध में किसी व्यक्ति पर आक्रमण नहीं करना चाहता था। अब मैं शांत हो गया हूँ, अतः इससे पुनः लड़ने के लिए तैयार हूँ। वह व्यक्ति भी खड़ा सुन रहा था उमर खलीफा के पैरों में गिर पड़ा। सर्वप्रथम क्रोध को मारना जरूरी है, क्योंकि क्रोध दूसरों को बाद में जलाता है, पहले यह क्रोध करने वाले व्यक्ति को ही जला देता है। क्रोध की आग अत्यन्त विनाशकारी है।

अगर हम किसी व्यक्ति को जलाने के लिए उस पर जलता हुआ कोयला फेकेंगे तो वह व्यक्ति तो बाद में जलेगा, पहले हमारा हाथ ही जलेगा। ठीक इसी तरह क्रोधाग्नि दूसरों के लिए बाद में घातक सिद्ध होती है, पहले वह क्रोध करने वाले के लिए ही आत्मघाती बन जाती है।

–कैलाश 'मानव'

शब्दों का महत्व

अपेक्षाएँ दुःखों को जन्म देती हैं। हम परिवार के सदस्यों के साथ अधिक मोह एवं आसक्ति रखते हैं, यही मोह व आसक्ति मनुष्य के दुःख का कारण बनती है। मोह में बंधकर व्यक्ति अपने कर्तव्यों को भूल जाता है। कर्तव्यों को भूलना नुकसानदायक होने के साथ–साथ कष्टकारक भी होता है।

जिह्वा ही शरीर का सबसे ज्यादा अच्छा और सबसे खराब भाग है। यही शत्रुता और यही मित्रता लाती है। अधिकतर लड़ाई–झगड़े आपसी मतभेद की वजह से कम, लेकिन जिह्वा के अनुचित प्रयोग की वजह से ज्यादा होते हैं।

एक बार की बात है, एक राजा अपने सैनिकों और मंत्रियों के साथ किसी स्थान पर भ्रमण कर रहे थे। अचानक राजा को प्यास लगी और उन्होंने अपने सैनिक से पानी लाने को कहा। सैनिक पानी की तालाब में इधर–उधर गया। थोड़ी देर बाद उसे दूर कहीं एक अंधा व्यक्ति पानी के मटके के साथ बैठा मिला। सैनिक उसके पास गया और बोला, "ऐ अंधे! महाराज को प्यास लगी है, पानी दे।"

सैनिक की बात सुनकर अंधे ने सैनिक से कहा, "जाओ, मैं तुम्हें पानी नहीं दूँगा, तुम सैनिक हो, सैनिक ही रहोगे।" सैनिक ने यह बात राजा को बताई। राजा ने अपने मंत्री को अंधे के पास पानी लाने भेजा। मंत्री ने अंधे से कहा, "ओ अंधे महाशय, राजा हेतु पानी दीजिए।" मंत्री की बात सुनकर अंधे ने मंत्री से कहा, "हे मंत्री! तुम कुटिल व्यक्ति हो और मैं कुटिल व्यक्तियों को पानी नहीं देता।" मंत्री ने सारा वृतान्त राजा को कह सुनाया। इस बार राजा स्वयं उस व्यक्ति के पास गए और कहा, "हे महात्मन्! मुझे प्यास लगी है और मैं आपसे पानी की याचना करता हूँ।" अंधे व्यक्ति ने सहर्ष राजा को पानी दिया। पानी पीने के पश्चात् राजा ने उससे पूछा, "हे सज्जन पुरुष! यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि आप देख नहीं सकते तथापि आपने सैनिक, मंत्री और मुझे पहचान लिया कि कौन क्या है? आपने उन दोनों को पानी देने से मना कर दिया और आपने मुझे आदरपूर्वक पानी पिलाया।"

राजा की बात सुनकर उस व्यक्ति ने सम्मानपूर्वक कहा, "हे राजन् उनके द्वारा प्रयोग किए गए शब्दों के आधार पर ही मैं पहचान पाया कि कौन क्या है? निम्न स्तर के शब्दों का प्रयोग निम्न प्राणी ही करता है और सम्मानीय शब्दों का प्रयोग कुलीन व्यक्ति करता है।

पानी देने या न देने के पीछे कारण भी, शब्दों का प्रयोग ही है।" शब्दों के द्वारा ही आपकी पहचान होती है। शब्दों में स्नेह और विनम्रता सुनने वाले शत्रु को भी मित्र बना देते हैं तथा शब्दों की कड़वाहट और निंष्टता परिवार के सदस्यों को भी शत्रु बना देती है। अतः शब्दों में क्रोध कभी भी नहीं लाएँ।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

डा. राम कुमार अग्रवाल जो डॉ. आर.के. अग्रवाल के नाम से जाने जाते थे, प्रदेश के प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक थे। वे बनेड़ा के रहने वाले थे। उनके सेवा भाव व परोपकार के किस्से दूर दूर तक दोहराये जाते थे। शिवनारायण अग्रवाल यूं तो कैलाश के दूर का रिश्तेदार था पर उनका सम्बन्ध मित्रता का ज्यादा हो गया था।

शिवनारायण ने कैलाश का परिचय डा. अग्रवाल से कराया तो वह उनसे बहुत प्रभावित हो गया और मन में एक ललक सी जगी कि इनकी तरह जन सामान्य की सेवा कर दीन दुखियों के दर्द हरने का प्रयास किया जाये।

डा. अग्रवाल बीकानेर चिकित्सालय में पदस्थापित थे पर इन दिनों छुट्टियों में वे घर आये हुए थे। छुट्टियां भले ही काम काज से ली हो मगर सेवा कार्य में कैसी छुट्टी? वे भीलवाड़ा आ जाते और जेल में जाकर कैदियों के साथ सत्संग करते, उन्हें ज्ञान की कहानियां सुनाते हुए अच्छे लोगों से प्रेरणा लेने को कहते। कैलाश को जब इसका पता लगा तो उसे अचरज हुआ कि जेल में कैसा सत्संग? वह डा. साहब के साथ जेल जाने लगा और अपनी आंखों से देखा कि किस तरह 800 से अधिक कैदी एक ही जाजम पर बैठ कर अत्यन्त तन्मयता से डा. साहब की बातें सुनते थे। जेलर तथा अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उनके साथ उसी जाजम पर एक तरफ बैठ जाते थे। डा. साहब कैदियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहते थे कि आप सब भी महान हो मगर किसी गलती के कारण यहां आये हो। सभी कैदियों से वे संकल्प कराते कि यहां से वापस जाने के बाद ऐसी गलती वापस नहीं दोहराएंगे।

अंश-23

उम्मीद से दूर हुई उदासी

रामकेवल–शेषावती निवासी काशा भटेरा जिला –सुल्तानपुर (उ.प्र.) खेतीहर साधारण परिवार का 6 वर्षीय पुत्र शैलेष जन्म से ही दोनों पाँव में पोलियो रोग के कारण उठने–बैठने से लाचार है। गाँव के आस–पास के शहरों में इलाज भी करवाया पर कोई कारगर नहीं हुआ। नारायण सेवा संस्थान के रतनलाल डिडवाणिया अस्पताल में इलाज के लिए बेटे को लेकर आए। श्री रामकेवल ने बताया कि गरीबी और ऊपर से बेटे के इस दुःख से पूरा परिवार ही टूट गया। इसी वर्ष उनके पड़ोस के गाँव के राम अचल गुप्ता ने हमें नारायण सेवा संस्थान में बेटे की जाँच की सलाह दी। वे भी यहाँ से इलाज करवा कर खुशी–खुशी लौटे थे। इस आशा की किरण के सहारे हम यहाँ आए। बायें पाँव का ऑपरेशन हो चुका है। दायें पाँव के ऑपरेशन किया गया, ऑपरेशन दवा, खाना–पीना और रहने का एक पैसा भी खर्च नहीं हुआ। डॉक्टर की दिखाई उम्मीद ने हमारी उदासी को दूर कर दिया है।